वाग्दीक्षा। तथा पुगणा दीक्षया दीक्षतः। यथा पुगणा दीक्षया दीक्षितः। तथा त्वा दीक्षया दीक्षयामि। प-थिवी त्वा दीक्षमाण्मनुदीक्षताम्। अन्तरिक्षं त्वा दीक्षमाण्मनुदीक्षताम्। दीक्षमाण्मनुदीक्ष-ताम्॥ ७॥

दिशस्वा दीक्षमाण्मन्दीक्षन्ताम्। आपस्वा दी-स्रमाण्मन्दीक्षन्ताम्। श्रोषधयस्वा दीक्षमाण्मन्-दीक्षनाम्। वाक् त्वा दीक्षमाण्मन्दीक्षताम्। क्यच-स्वा दीक्षमाण्मन्दीक्षन्ताम्। सामानि त्वा दीक्ष-माण्मन्दीक्षन्ताम्। यजूश्वि त्वा दीक्षमाण्मन्दी-स्वाम्। अहं य राचिया कृषिय दृष्टिय। त्विषया-पचितिया ॥ ८॥

श्रापश्चीषधयश्च। कर्वंच सून्द्रता च। तास्वा दी-श्वमाणमन्दीक्षन्ताम्। स्वे दश्चे दश्चिपते इ सीद। दे-वानाः सुन्ना महते रणाय। स्वासस्यस्तनुवा संविश-स्व। पिते वैधिसूनव श्रासुशेवः। शिवा मा शिवमा-विश्व। सत्यं म श्रातमा। श्रद्धा मेऽश्चितिः॥ १॥

न्ता मे प्रतिष्ठा। स्वित्रप्रस्ता मा दिशा दीश्य-